BA Part I (H)
Paper II

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ college Rajnagar

सांस्कृतिक उद्विकास (Cultural evolution - L.H. Morgan)

मार्गन ने अपनी पुस्तक Ancient Society में समाज के विकास को सांस्कृतिक उद्विकास के आधार पर समझाने का प्रयास किया। मार्गन ने संस्कृति को ही मानव उद्विकास का मुख्य कारक माना है। सांस्कृतिक उद्विकास की विभिन्न अवस्थाओं के माध्यम से स्पष्ट किया है –

(1) जंगली युग (Aged Savagery) → मार्गन ने जंगली युग को तीन अवस्थाओं के आधार पर सांस्कृतिक उद्विकास को स्पष्ट किया है। जो निम्न अवस्था, मध्यम अवस्था तथा उच्च अवस्था है –

(a) निम्न जंगली युग :- मार्गन के अनुसार इस युग का प्रतिनिधित्व करने वाला आज विश्व में कोई समाज नहीं है। इस अवस्था में मानव का जीवन कन्द मूल पर आधारित था। एक दूसरे के साथ सम्पर्क करने के लिए प्रारम्भिक भाषा की शुरुआत हो चुकी थी।

मॉर्गन ने मानव समाज की संस्कृति की प्रथम अवस्था की व्याख्या में भाषा के प्रारम्भ को महत्वपूर्ण विशेषताओं के रूप में स्वीकार किया है।

(b) मध्यम जंगली युग → इस अवस्था में मानव मछलियों का शिकार करने के रूप में उपकरण का प्रयोग करना शुरू कर दिया था। आग जलाना भी मानव अपने जीवन में प्रयोग करना प्रारम्भ किया। यह सांस्कृतिक उद्विकास की मध्यम जंगली अवस्था था।

(c) उच्च जंगली युग ÷ मॉर्गन के अनुसार इस अवस्था में मनुष्य ने शिकार के लिए धनुष एवं बाण आदि का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया था। विभिन्न समाजों के अध्ययनों के आधार पर मॉर्गन ने बतलाया कि इस समय पोलीनेशिया के अनेक जनजातियां जंगली युग की उच्च अवस्था की विशेषताओं को प्रदर्शित करने के कारण इस युग की प्रतिनिधि कही जा सकती है।

(2) बर्बरता का युग (Age of Barbarism) ÷ मॉर्गन ने बर्बरता युग को तीन उपअवस्थाओं में बांटा है.

(a) निम्न अवस्था ÷ बर्बरता के युग की प्रथम अवस्था में मिट्टी के बर्तन बनाने की कला का प्रारम्भ हुआ।

चाक के आविष्कार के फलस्वरूप मानव द्वारा अपने लिए मिट्टी के अनेक वस्तुओं का निर्माण प्रारम्भ हो गया। मार्गेन का कथन है कि दक्षिणी जनजाति के सदस्य आज इसी अवस्था में जीवन यापन कर रहे हैं।

(b) मध्यम अवस्था :- बर्बरता की इस अवस्था में पशुपालन, स्थानान्तरित कृषि द्वारा खाद्यान्न उत्पादन, कृषि सिंचाई तथा मिट्टी के ईंटों तथा पत्थर के टुकड़ों से मकान बनाने का कार्य प्रारम्भ किया। जूनी जनजाति के सदस्य बर्बरता की युग की मध्यम अवस्था का प्रतिनिधि करते हैं।

(c) उच्च अवस्था :- बर्बरता के युग की चरम सीमा को मार्गेन हथियारों में होने वाली क्रान्ति के परिणाम के रूप में देखते हैं। इस अवस्था में लोहे को गलाने की विधि की खोज की गई। लोहे का आविष्कार होने के पश्चात लोहे से निर्मित हथियारों द्वारा अनेक लड़ाइयां लड़ी गयी और बड़े-बड़े साम्राज्य स्थापित हुए। इस युग में गुलामों की खरीद और बिक्री के कारण ही मार्गेन ने बर्बरता की उच्च अवस्था में इसे स्वीकार किया।

मार्गन ने इस अवस्था के प्रतिनिधि के रूप में हेमारिक ग्रीक समाजों का उदाहरण दिया है। बर्बरता की युग की उक्त तीनों अवस्थाओं में परिवार, विवाह धर्म, कला एवं अन्य सांस्कृतिक नियमों में परिवर्तन की प्रक्रिया चलती रही।

③ ~~सभ्यता~~ सभ्यता का युग (Age of civilization)

मार्गन ने सभ्यता के युग का आरम्भ भाषा के अन्तर्गत ग्राम प्रणाली के प्रारम्भ से माना। ग्राम प्रणाली में वे शब्द आते है जिनका निर्माण महत्वपूर्ण ध्वनियों को अर्थ देने वाले अक्षरों के मिश्रण से होता है। भाषा एवं लिपि को महत्व प्रदान करते हुए मार्गन ने सभ्यता का प्रारम्भ उस समय से माना है जबकि समाज में लिपि का आविष्कार हुआ। मानव संस्कृति के उद्विकास की चरम अवस्था की चर्चा करते हुए मार्गन ने लिखा है कि "वह समय आयेगा जब बौद्धिकता, सम्पत्ति के स्वामित्व को समाप्त कर देगी।"